2 फणीश्वरनाथ 'रेणु'

व्यक्तित्व

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार प्रान्त के पूर्णिया जिले में स्थित औराही हिंगना ग्राम में सन् 1921 ई० में हुआ था। आपने इण्टर तक शिक्षा प्राप्त की और स्वतन्त्रता-आन्दोलनों में भाग लेते रहे। समाजवादी विचारकों का इन पर स्पष्ट प्रभाव था। ये समाजवादी दल के सक्रिय सदस्य भी रहे। इनके लेखन पर बंगला भाषा और साहित्य का व्यापक प्रभाव है। रेणु जी 11 अप्रैल, 1977 को दिवंगत हुए।

कृतित्व

रेणु जी के कथा-संग्रह हैं—**'ठुमरी'** तथा **'आदिम रात्रि की महक'**। **'मैला आँचल'**, **'परती परिकथा'** तथा **'दीर्घतपा'** इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

कथा-शिल्प एवं भाषा शैली

रेणु आंचलिक कथाकार थे। प्रेमचन्द के बाद ग्रामीण वातावरण और उसकी समस्याओं को मार्मिकता और यथार्थता के साथ प्रस्तुत करनेवाले आप पहले साहित्यकार माने गये। प्रेमचन्द से आपकी विशेषता यह है कि जहाँ प्रेमचन्द को जनजीवन से केवल सहानुभूति थी, वहाँ रेणु ने उसके साथ आत्मीयता और तादात्म्य का सम्बन्ध स्थापित कर लिया। आपकी हैसियत दर्शक की न होकर भोक्ता की रही है। निम्न-मध्यवर्ग के जीवन को आपने विशेष रूप से अपनी कहानियों का विषय बनाया है। आपकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं—**'पान की बेगम', 'रसपिरिया', 'तीन बिंदियाँ'** आदि।

रेणु में संवेदना और निरीक्षण की अपूर्व शक्ति थी। हिन्दी कथा-जगत् में आपका उदय एक ऐतिहासिक घटना है। कथा में आंचलिकता का सन्निवेश तो आपका वैशिष्ट्य है ही, शिल्प के स्तर पर भी आपने रिपोर्ताज की शैली का उपयोग करके किस्सागोई को नयी दिशा दी है और उसका संस्कार किया है। इनकी कहानियों में सूक्ष्म ताने-बाने बुनने का अपूर्व कौशल लक्षित होता है। गहरी संवेदनशीलता और ध्वनि-चित्रात्मक सघन संगीतात्मकता आपकी कथा-शैली की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। प्रभाव-बिम्बों की योजना द्वारा कहानी के वातावरण को वास्तविक और चित्रोपम बनाने में आप सिद्धहस्त हैं। आपकी कहानियों का रचना-विधान औपन्यासिक कहा जा सकता है। उनमें पात्रों, घटनाओं और भाव-चित्रों का बाहुल्य हुआ करता है। कथा-तन्तुओं की बहुलता और उसके बिखराव को आप अत्यन्त सधे ढंग से एक विशेष बिन्दु अथवा मुहूर्त्त की ओर मोड़ देते हैं, जिसके फलस्वरूप कहानी का प्रभाव सघन, मार्मिक और स्थायी हो उठता है।

रेणु जी कहानी की भाषा-शैली को नयी दिशा प्रदान करनेवाले कथाकार थे। गाँव में बोले जानेवाले विकृत शब्दों, रूपों और देशज शब्दों का मुक्त प्रयोग आपकी भाषा की प्रधान विशेषता है। ग्रामीण मुहावरों और कहावतों के जीवन्त प्रयोग आपकी भाषा में देखे जा सकते हैं।

बिहार के ग्रामांचलों से निजी स्तर पर जुड़े होने के कारण आपकी कथा-भाषा में उनकी रोजमर्रा की शब्दावली बड़े सहज किन्तु व्यंजक रूप में घुल-मिल गयी है। आपकी प्रसिद्ध लम्बी कहानी, **'तीसरी कसम'** हिन्दी में लम्बी कहानियों की परम्परा का सूत्रपात करती है। उसका फिल्मांकन भी हो चुका है।

पंचलाइट

पिछले पन्द्रह महीने से दण्ड-जुर्माने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स खरीदा है इस बार, रामनवमी के मेले में। गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति की अलग-अलग 'सभाचट्टी' है। सभी पंचायतों में दरी, जाजिम, सतरंजी और पेट्रोमेक्स हैं। पेट्रोमेक्स, जिसे गाँववाले पंचलाइट कहते हैं।

पंचलाइट खरीदने के बाद पंचों ने मेले में ही तय किया—दस रुपये जो बच गये हैं, इनसे पूजा की सामग्री खरीद ली जाय—बिना नेमटेम के कल-कब्जेवाली चीज का पुन्याह नहीं करना चाहिए। अंग्रेज बहादुर के राज में भी पुल बनाने के पहले बलि दी जाती थी।

मेले से सभी पंच दिन-दहाड़े ही गाँव-लौटे, सबसे आगे पंचायत का छड़ीदार पंचलाइट का डिब्बा माथे पर लेकर और उसके पीछे सरदार, दीवान और पंच वगैरह। गाँव के बाहर ही ब्राह्मण-टोली के फुटंगी झा ने टोक दिया—कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो?

देखते नहीं हैं, पंचलैट है! बामन टोली के लोग ऐसे ही बात करते हैं। अपने घर की ढिबरी को भी बिजली-बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन!

टोले भर के लोग जमा हो गये। औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सभी कामकाज छोड़कर दौड़े आये—चल रे चल! अपना पंचलैट आया है, पंचलैट! छड़ीदार अगनू महतो रह-रहकर लोगों को चेतावनी देने लगा—हाँ, दूर से, जरा दूर से! छू छा मत करो, ठेस न लगे।

सरदार ने अपनी स्त्री से कहा—साँझ को पूजा होगी, जल्द से नहा-धोकर चौका पीढ़ी लगाओ।

टोले की कीर्त्तन मण्डली के मूलगैन ने अपने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा—देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्त्तन होगा। बेताले लोगों से पहले ही कह देता हूँ, आज यदि आखर धरने में डेढ़-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट!

औरतों की मण्डली में गुलरी काकी गोसाईं का गीत गुनगुनाने लगी। छोटे-छोटे बच्चों ने उत्साह के मारे बेवजह शोरगुल मचाना शुरू किया।

सूरज डूबने के एक घण्टा पहले ही टोले-भर के लोग सरदार के दरवाजे पर आकर खड़े हो गये—पंचलैट, पंचलैट!

पंचलैट के सिवा और कोई गप नहीं, कोई दूसरी बात नहीं। सरदार ने गुड़गुड़ी पीते हुए कहा—दूकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पाँच कोड़ी पाँच रुपया। मैंने कहा कि दूकानदार साहेब, यह मत समझिए कि हम लोग एकदम देहाती हैं। बहुत-बहुत पंचलाइट देखा है। इसके बाद दूकानदार मेरा मुँह देखने लगा। बोला, लगता है आप जाति के सरदार हैं! ठीक है, जब आप सरदार होकर खुद पंचलैट खरीदने आये हैं तो जाइए, पूरे पाँच कोड़ी में आपको दे रहे हैं।

दीवानजी ने कहा—अलबत्ता चेहरा परखनेवाला दूकानदार है। पंचलैट का बक्सा दूकानदार का नौकर देना नहीं चाहता था। मैंने कहा, देखिए दूकानदार साहेब, बिना बक्सा पंचलैट कैसे ले जायेंगे? दूकानदार ने नौकर को डाँटते हुए कहा, क्यों रे! दीवानजी की आँख के आगे 'धुरखेल' करता है, दे दो बक्सा!

टोले के लोगों ने अपने सरदार और दीवान को श्रद्धा-भरी निगाहों से देखा। छड़ीदार ने औरतों की मण्डली में सुनाया—रास्ते में सन्न-सन्न बोलता था पंचलैट!

लेकिन.....ऐन मौके पर 'लेकिन' लग गया! रूदल साह बनिये की दूकान से तीन बोतल किरासन तेल आया और सवाल पैदा हुआ कि पंचलैट को जलायेगा कौन?

यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आयी थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी नहीं। अब पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है, कीर्त्तनिया लोग ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ है। गाँववालों ने आज तक कोई ऐसी चीज नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत है न, भाई रे, गाय लूँ? तो दुहे कौन? ..... लो मजा! अब इस कल-कब्जेवाली चीज को कौन बाले।

यह बात नहीं कि गाँव भर में कोई पंचलैट बालनेवाला नहीं। हरेक पंचायत में पंचलैट है। उसके जलानेवाले जानकार हैं। लेकिन सवाल है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिन्दगी भर ताना कौन सहे! बात-बात में दूसरे टोले के लोग कूट करेंगे—तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथ से....! न, न! पंचायत की इज्जत का सवाल है। दूसरे टोले के लोगों से मत कहिए।

चारों ओर उदासी छा गयी। अँधेरा बढ़ने लगा। किसी ने अपने घर में आज ढिबरी भी नहीं जलाई थी।.....आज पंचलैट के सामने ढिबरी कौन बालता है!

सब किये-कराये पर पानी फिर रहा था। सरदार, दीवान और छड़ीदार के मुँह में बोली नहीं। पंचों के चेहरे उतर गये थे। किसी ने दबी आवाज में कहा—कल-कब्जेवाली चीज का नखरा बहुत बड़ा होता है।

एक नौजवान ने आकर सूचना दी—राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो-बैठो, तुरन्त जलने लगेगा।

पंचों ने सुनकर मन-ही-मन कहा—भगवान् ने हँसने का मौका दिया है, हँसेंगे नहीं? एक बूढ़े ने आकर खबर दी, रूदल साह बनिया भारी बतंगड़ आदमी है। कह रहा है पंचलैट का पम्पू जरा होशियारी से देना।

गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले? वह जानती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है। लेकिन, गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बन्द है। मुनरी की माँ ने पंचायत से फरियाद की थी कि गोधन रोज उसकी बेटी को देखकर 'सलम-सलम' वाला सलीमा का गीत गाता है—हम तुमसे मोहब्बत करके सलम! पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रुपया जुरमाना! न देने से हुक्का-पानी बन्द।.....आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाये? मुनरी उसका नाम कैसे ले? और उधर जाति का पानी उतर रहा है।

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली के कान में बात डाल दी—कनेली!.....चिगो, चिधऽऽ, चिन....! कनेली मुस्कराकर रह गयी—गोधन तो बन्द है! मुनरी बोली—तू कह तो सरदार से!

—"गोधन जानता है, पंचलैट बालना!" कनेली बोली।

—कौन, गोधन? जानता है बालना? लेकिन.....।

सरदार ने दीवान की ओर देखा और दीवान ने पंचों की ओर। पंचों ने एकमत होकर हुक्का-पानी बन्द किया है। सलीमा का गीत गाकर आँख का इशारा मारनेवाले गोधन से गाँव भर के लोग नाराज थे। सरदार ने कहा—जाति की बन्दिश क्या, जबकि जाति की इज्जत ही पानी में बही जा रही है! क्यों जी दीवान?

दीवान ने कहा—ठीक है।

पंचों ने भी एक स्वर से कहा—ठीक है। गोधन को खोल दिया जाये।

सरदार ने छड़ीदार को भेजा। छड़ीदार वापस आकर बोला—गोधन आने को राजी नहीं हो रहा है। कहता है, पंचों की क्या परतीत है? कोई कल-कब्जा बिगड़ गया तो मुझे ही दण्ड-जुरमाना भरना पड़ेगा।

छड़ीदार ने रोनी सूरत बनाकर कहा—किसी तरह गोधन को राजी करवाइए, नहीं तो कल से गाँव में मुँह दिखाना मुश्किल हो जायगा।

गुलरी काकी बोली—जरा मैं देखूँ कहके!

गुलरी काकी उठकर गोधन के झोंपड़े की ओर गयी और गोधन को मना लायी। सभी के चेहरे पर नयी आशा की रोशनी चमकी। गोधन चुपचाप पंचलैट में तेल भरने लगा। सरदार की स्त्री ने पूजा की सामग्री के पास चक्कर काटती हुई बिल्ली को भगाया। कीर्त्तन-मण्डली का मूलगैन मुरछल के बालों को सँवारने लगा। गोधन ने पूछा—इसपिरिट कहाँ है? बिना इसपिरिट के कैसे जलेगा?

.....लो मजा! अब यह दूसरा बखेड़ा खड़ा हुआ। सभी ने मन ही मन सरदार, दीवान और पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट किया—बिना बूझे-समझे काम करते हैं ये लोग! उपस्थित जन-समूह में फिर मायूसी छा गयी। लेकिन गोधन बड़ा होशियार लड़का है। बिना स्पिरिट के ही पंचलैट जलायेगा।.....थोड़ा गरी का तेल ला दो! मुनरी दौड़कर गयी और एक मलसी गरी का तेल ले आयी। गोधन पंचलैट में पम्प देने लगा।

पंचलैट की रेशमी थैली में धीरे-धीरे रोशनी आने लगी। गोधन कभी मुँह से फूँकता, कभी पंचलैट की चाबी घुमाता। थोड़ी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज निकलने लगी और रोशनी बढ़ती गयी। लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है।

अन्त में पंचलाइट की रोशनी से सारी टोली जगमगा उठी, तो कीर्त्तनिया लोगों ने एक स्वर में, महाबीर स्वामी की जय-ध्वनि के साथ कीर्त्तन शुरू कर दिया। पंचलैट की रोशनी में सभी के मुस्कराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गये। गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनरी ने हसरत भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुईं और आँखों ही आँखों में बातें हुईं—कहा-सुना माफ करना! मेरा क्या कसूर?

सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से पास बुलाकर कहा—तुमने जाति की इज्जत रखी है। तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना।

गुलरी काकी बोली—आज रात में मेरे घर में खाना गोधन।

गोधन ने एक बार फिर मुनरी की ओर देखा। मुनरी की पलकें झुक गयीं।

कीर्त्तनिया लोगों ने एक कीर्त्तन समाप्त कर जयध्वनि की—जय हो! जय हो...। पंचलैट के प्रकाश में पेड़-पौधों का पत्ता-पत्ता पुलकित हो रहा था।

अभ्यास प्रश्न

1. पंचलाइट एक आंचलिक कहानी है—आंचलिकता की धारणा को स्पष्ट करते हुए उसके प्रकाश में पंचलाइट का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा आंचलिक कहानी से आप क्या समझते हैं? 'पंचलाइट' शीर्षक रचना के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

2. 'पंचलाइट' कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा 'पंचलाइट' कहानी की कथावस्तु लिखिए। **[2017 MB, MG, 19 CM]**

3. ''पंचलाइट कहानी में ग्रामीण समाज के सच्चे स्वरूप के दर्शन होते हैं।'' कहानी से उद्धरण देते हुए इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

4. कहानी-कला की दृष्टि से 'पंचलाइट' कहानी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5. 'पंचलाइट' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।
[2016 SD, 17 MC, MD, 19 CQ, 20 ZB, ZC, ZE, ZG]

अथवा कथानक के आधार पर 'पंचलाइट' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

6. रेणु के भाषा-प्रयोग की प्रमुख विशेषता बताते हुए उनके द्वारा प्रयुक्त असाधारण शब्दों पर प्रकाश डालिए।

7. कहानी कला की दृष्टि से 'पंचलाइट' कहानी की समीक्षा कीजिए।

8. कहानी की सफल परिणति के लिए लेखक के गौण कथा-विधान कौशल पर प्रकाश डालिए।

9. 'पंचलाइट' कहानी का सारांश प्रस्तुत कीजिए। **[2020 ZH, ZJ, ZK, ZL, ZM]**

10. हिन्दी के कहानीकारों में रेणु के महत्त्व का प्रतिपादन कीजिए।

11. 'पंचलाइट' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZM]**

12. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'पंचलाइट' कहानी की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

13. 'पंचलाइट' कहानी के केन्द्रीय भाव की सप्रमाण व्याख्या कीजिए।

14. फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी कला की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए। **[2017 MA]**

15. 'पंचलाइट' कहानी की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

16. 'पंचलाइट' कहानी की समीक्षा देश-काल के आधार पर कीजिए।

17. 'पंचलाइट' कहानी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

18. 'पंचलाइट' कहानी का कथासार लिखते हुए कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

19. 'पंचलाइट' कहानी की मुनरी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

20. भाषा-शैली की दृष्टि से 'पंचलाइट' कहानी के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

21. 'पंचलाइट' कहानी की कहानी-कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

22. 'पंचलाइट' के नायक की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। **[2018 AA]**

23. 'पंचलाइट' के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

24. 'पंचलाइट' कहानी के कथानक की विवेचना कीजिए।

25. 'कथानक' के आधार पर 'पंचलाइट' कहानी के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZA]**

26. 'पंचलाइट' कहानी के तत्वों का उल्लेख कीजिए। **[2019 CQ]**